समावेशी शिक्षा में सामाजिक परिवेश की भूमिका

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ–226017,उ.प्र.

शोध सारांश

समावेशी शिक्षा का आशय दिव्यांग विद्यार्थियों (जिन्हें आजकल विशिष्ट आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी कहा जाता है) को सामान्य बच्चों के साथ बिठाकर सामान्य रूप से पढ़ाना है, ताकि सामान्य बच्चों और विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों में कोई भेदभाव न रहे तथा दोनों तरह के विद्यार्थी एक–दूसरे को ठीक ढंग से समझते हुए आपसी सहयोग से पठन–पाठन के कार्य को कर सकें।समावेशी शिक्षा का एक व्यापक लक्ष्य यह भी प्रतीत होता है कि एक साथ शिक्षित होने पर भविष्य में समाज के अन्दर विशिष्ट आवश्यकता वाले व्यक्तियों के सरोकारों को आम लोग बेहतर ढंग से समझ सकें तथा उनके प्रति अपेक्षित सामाजिक संवेदनशीलता का विकास हो सके।

Keywords: *समावेशी शिक्षा,शारीरिक अक्षमता, सामाजिक परिवेश,भूमिका*

विश्वगुरु भारत अपने शिक्षा अभियान की प्रगति से उत्साहित और आनंदित है। भारत असल में राष्ट्र के सर्वंगीण विकास के लिए अपनी शिक्षा अभियान के तहत निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में कारगर तरीके से धीरे–धीरे आगे बढ़ रहा है। फिर भी आज के बाजारीकरण के इस समय में यह कहना अनुचित न होगा कि प्रशासन तंत्र यह सोचता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का संतुलित, सर्वागीण एवं चहुमुँखी विकास के लिए समावेशी शिक्षा ही एकमात्र विकल्प है, यह सरासर कोरी कल्पना है। अपने कठिन परिश्रम के बावजूद भारत का यह शिक्षा अभियान सबके लिए शिक्षा के उद्देश्य से अभी बहुत दूर है। शिक्षा के उन्नयन के लिए शिक्षकों की कमी, विद्यालयों का अभाव, विभिन्न प्रकार के शिक्षा से सम्बंधित विद्यालयी साजो–समान, विभिन्न राज्यों के लिए आधार भूत सुविधाओं की आवश्यकता, सही तरीके से मूल्यांकन की चुनौती आदि जैसी जटिल समस्याएँ हैं जिनका निराकरण नितांत आवश्यक है । मसलन ऐसे हालात में सबके लिए समावेशी शिक्षा की अपेक्षा करना कितना उचित होगा इसके बारे में कुछ कह पाना अभी कठिन है । यहाँ यह बताना आवश्यक है कि समावेशी शिक्षा केवल अशक्त व्यक्तियों के लिए नहीं है बल्कि सभी को समान रूप से शिक्षा प्रदान करना समावेशी शिक्षा का उद्देश्य है।

समावेशी शिक्षा का अर्थ आम भाषा में लगाएँ तो कहा जा सकता है कि वे लोग जो शारीरिक अक्षमता के कारण समाज का हिस्सा नहीं बन पाते या समाज के विकास में सहायक नहीं हो पाते । व्यक्ति पहले अपना विकास करता है और यह बात स्पष्ट है कि व्यक्ति के विकास से ही समाज, और पूरे राष्ट्र का विकास संम्भव है। समावेशी विकास की अवधारणा कुछ इसी विचारधारा से जुड़ी है। जिसमें हम देश–विदेश में विकास की धारा से जुड़ सकते हैं। अमेरिका और यूरोप जैसे देशों में उन्नीसवीं शताब्दी से ही समावेशी शिक्षा की जड़ें पाई जाती थीं। जहाँ पर

ऐसे बच्चों के लिए क्रमबद्ध विकास किये गये। वास्तविकता यहाँ तक देखने को मिलती हैं कि मानसिक कमजोर बच्चों को मुख्यधारा में लाने के लिये यूरोप ने प्रयास किये। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की यदि बात की जाये तो अमेरिका व यूरोप दोनों ने समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया लेकिन यह सत्य है कि महत्वपूर्ण विचार विशिष्ट शिक्षा कि क्षेत्र में यूरोप से अमेरिका गये। हालाँकि बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए अमेरिका ने भी कई क्षेत्र स्थापित किये।

समावेशी शिक्षा में प्रतिभाशाली बालक तथा सामान्य बालक एक साथ कक्षाओं में पूर्ण समय या अर्द्धकालिक समय में शिक्षा ग्रहण करते हैं। क्रम नियंत्रित तथा अधिक प्रभावशाली वातावरण में शिक्षा देनी चाहिये। समावेशी शिक्षा दिव्यांग बच्चों की शिक्षा सामान्य स्कूल तथा सामान्य बच्चों के साथ कुछ अधिक सहायता प्रदान करने की और इंगित करती है। यह शारीरिक तथा मानसिक रूप से बाधित बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा प्राप्त करना विशिष्ट सेवाएँ देकर विशिष्ट आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिये सहायता करती है।

समावेशी शिक्षा, समावेशी समाज एवं समावेशी विकास के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व है । भारत में समावेशी शिक्षा के उत्थान को अलग–अलग स्तरों में विभाजित करके सुगमता से देखा और समझा जा सकता है । "भारत के वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में समावेशी शिक्षा के सत्य से साक्षात्कार के लिए सर्व–शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान और राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान की समीक्षा जरूरी है, जैसा कि विदित है ये तीनों अभियान क्रमशरू प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा को गति प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू किए गए हैं ।" जिससे कि शिक्षा में समावेशन के स्तर को जल्द से जल्द प्राप्त किया जा सके । शिक्षा में समावेशन के इन सभी स्तरों को अलग–अलग करके भलीभांति समझा जा सकता है ।

घर–परिवार तथा पास–पड़ोस को समावेशी शिक्षा की पृष्टभूमि की प्रथम पाठशाला माना जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी क्योंकि बालक की प्रारम्भिक शिक्षा का श्रीगणेश यहीं से होता है । माँ बच्चे की पहली शिक्षक होती है जिसके कारण माता का यह दायित्व होता है कि अपने बच्चे के चहुमुखी विकास के लिए एक समावेशी वातावरण का निर्माण करे जिसमें बच्चे का समुचित विकास सुनिश्चित हो सके । एक ही माता–पिता की यदि अनेक संतान हैं तो उन सबकी बुद्धिलब्धि (सामान्य तथा विशिष्ट बालकों या दिव्यांग बालकों के संदर्भ में) भी अलग–अलग होगी जिसके कारण उनके सीखने की क्षमता भी अलग–अलग होगी जो कि उनकी विशिष्ट मानसिक क्षमता का परिचायक है । अतः माँ–बाप तथा घर के सभी सदस्यों के साथ–साथ समाज के लोगों की यह नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वह अपने बच्चों को समावेशन की प्रक्रिया के तहत एक ऐसा माहोल दें कि सभी का विकास साथ–साथ हो सके । इसके लिए सभी अभिवावकों को प्रत्येक बच्चे को एक समान दृष्टि से देखते हुए उनके रहन–सहन, खान–पान, खेल–कूद, पढाई–लिखाई आदि समस्त क्रिया–कलापों एवं गतिविधियों में सामंजस्य स्थापित करना चाहिए । जिससे बच्चों में आपसी भाईचारे एवं सहयोग की भावना का विकास हो सके और वे समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें । अतः इसी माता–पिता, घर–परिवार तथा पास–पड़ोस से समावेशन का पहला सोपान आरम्भ होता ऐसा माना जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी ।

समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत की शिक्षा व्यवस्था को ऐसी वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली पर विचार करना चाहिए जो दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष रूप से विचारशील व उत्तरदायी हो। विशिष्ट बालकों को

ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम को लचीला बनाना चाहिए ताकि वे आसानी से सीखकर अपने आप को समाज की मुख्य धारा से जोड़ सकें । इसके लिए बच्चों के माता–पिता, पास–पड़ोस, प्राथमिक शिक्षक, माध्यमिक शिक्षक, उच्च शिक्षा के शिक्षक के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाओं के संरक्षक, समाजसेवी संस्थाओं आदि सभी के सहयोग व समन्वय की विशेष जरुरत है। इनके सहयोग के बिना समावेशी शिक्षा व समावेशी समाज की कल्पना करना बेमानी होगी। अतः इस सर्वव्यापी लक्ष्य को प्राप्त करने तथा इसको सफल बनाने के लिए इन सभी के अपेक्षित सहयोग की आवश्यकता हमेशा बनी रहेगी। भारत सरकार को भी इस कार्य के प्रति ईमानदारी पूर्ण रवैया अपनाते हुए ठोस कदम उठाने चाहिए ताकि समावेशी शिक्षा और समावेशी समाज के लक्ष्य को जल्द से जल्द प्राप्त किया जा सके ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. झा एम0 एस0, समावेशी शिक्षा दृष्टिकोण और प्रक्रियाएँ, एस प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
2. चतुर्वेदी शिखा, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ, 2008
3. सक्सेना, प्रो0 उदय वीर, भारतीय शिक्षा का इतिहास, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2008
4. मित्तल एस0 आर, एकीकृत और समावेशित शिक्षा, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
5. शर्मा डॉ0 विमलेश, समावेशित विशिष्ट शिक्षा, शारदा पुस्तक सदन, नई दिल्ली, 2016